**International Journal of Academic Research and Development**
**ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.academicsjournal.com**
**Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 861-863**

# रूद्रप्रयाग का सांस्कृतिक पर्यटन और मंदिर : एक अध्ययन

**[1] कुलदीप आजाद नेगी, [2] प्रो. धीरेन्द्र पाठक**

[1] शोध छात्र, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] शोध निर्देशक, प्रोफेसर, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

## प्रस्तावना

उत्तराखंड के संस्कृति को यहां के धर्मस्थल से समझा जा सकता है। कुमाउं और गढ़वाल के इलाके के विभिन्न जातीय समूहों का यह विषम मिश्रण है। इस राज्य में रहने वाले ज्यादातर लोग हिंदू और बौद्ध धर्म से हैं। हिंदू धर्म की सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ यात्रा कुंभ मेला हरिद्वार में होता है। इसे विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक सम्मेलन माना जाता है। राज्य के अन्य महत्वपूर्ण उत्सवों में घी संक्राति, वट सावित्री, खतरुआ, फूल देई, हरेला मेला, नंदा देवी मेला आदि शामिल हैं।

रुद्रप्रयाग में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं, चाहे वो प्रकृति, वन्यजीवन, सहासिक पयर्टन या तीर्थ स्थल कुछ भी क्यों ना हो। यहां के प्रमुख स्थानों में केदारनाथ, रुद्रप्रयाग, अगस्त्यमुनि, बेंजी कांडई दश्जूला, डार्मवाड़ स्यून्द, त्रियुगीनारायण, गुप्तकाशी, अंदरवाड़ी, गौरीकुण्ड और पिथौरागढ़ हैं। यदि आपको सहासिक पयर्टन पसंद है और कुछ कठिन चुनौतियां लेना चाहते हैं तो आप ऊँचे या छोटे पहाडी अभियानों की ट्रेकिंग, रिवर राफ्टिंग, पैरा ग्लाइडिंग, हेंग ग्लाइडिंग, पर्वतारोहण, स्कीइंग या दूसरी कई गतिविधियां कर सकते हैं।

रुद्रप्रयाग का इतिहास, रुद्रप्रयाग अलकनंदा तथा मंदाकिनी नदियों का संगमस्थल है। इन दोनों नदियों को देखकर ऐसा लगता है मानो दो बहनें आपस में एक दूसरे को गले लगा रहीं हो। ऐसा माना जाता है कि यहां नारद मुनि ने भगवान शिव की उपासना की थी और नारद जी को आर्शीवाद देने के लिए ही भगवान शिव ने रौद्र रूप में अवतार लिया था। यहां स्थित शिव और जगदम्बान मंदिर प्रमुख धार्मिक स्थापनों में से है। यहाँ से अलकनंदा देवप्रयाग में जाकर भागीरथी से मिलती है तथा गंगा नदी का निर्माण करती है। भगवान शिव के नाम पर बसा रूद्रप्रयाग जिला रूद्रप्रयाग अलकनंदा और मंदाकिनी नदी पर स्थित है।

रुद्रप्रयाग जिला भारत के उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल का एक जिला है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल 2,439 वर्ग कि.मी. हैं। रुद्रप्रयाग कस्बे में इस जिले का प्रशासनिक मुख्यालय स्थित है। यह जिला उत्तर में उत्तरकाशी जिले, पूर्व में चमोली जिले, दक्षिण में पौड़ी जिले और दक्षिण में टिहरी जिले से घिरा हुआ है।[1]

## अगस्त्यमुनि–अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग

रुद्रप्रयाग से अगस्त्यमुनि की दूरी 18 किलोमीटर है। यह समुद्र तल से 1000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित है। यह वहीं स्थान है जहां ऋषि अगस्त्यमुनि ने कई वर्षों तक तपस्या की थी। इस मंदिर का नाम अगस्तेश्वर महादेव ने ऋषि अगस्त्ये के नाम पर रखा था। बैसाखी के अवसर पर यहां बहुत ही बड़ा मेला लगता है। यहां दूर–दूर से श्रद्धालु आते हैं और अपने इष्ट देवता से प्रार्थना करते हैं। महर्षि अगस्त्य के तपोस्थल होने से इसका नाम अगस्त्यमुनि पड़ा। यहां महर्षि अगस्त्य का प्राचीन मंदिर भी हैं।

अगस्त्यमुनि में एक बड़ा मैदान है जहाँ वर्तमान में एक स्टेडियम बना है। बैसाखी के अवसर पर यहां बहुत ही बड़ा मेला लगता है। यहां दूर–दूर से श्रद्धालु आते हैं और अपने इष्ट देवता से प्रार्थना करते हैं। इस स्टेडियम में ही एक हैलीपैड बना है जहाँ पर केदारनाथ जाने वाला पवनहंस नामक हैलीकॉप्टर उतरता है। शहर में दो बैंक एवं एक सरकारी अस्पताल हैं।

## रुद्रनाथ

अलकनन्दा और मंदाकिनी नदियों के संगम पर स्थित इस स्थान के बारे में मान्यता है कि यहां भगवान शिव स्वयं ''रुद्रनाथ'' के रुप में यहां विराजमान हैं। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार अलकनन्दा और मंदाकिनी दोनों नदियों को बहनों की संज्ञा दी गई है, कहां जाता है कि अलकनन्दा गौरवर्ण व मन्दाकनी श्यामवर्ण की थी जिसका अंतर आज भी दोनों नदियों के पानी के रंगों में देखने को मिलता है।

चार धाम की यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों के लिए यह महत्वपूर्ण स्थान है, यही से 8 कि.मी. आगे तिलवाड़ा बाजार हैं, जो मंदाकिनी नदी के किनारे पर है और ये बाजार आस–पास के गाँव का मुख्य बाजार है। रुद्रप्राग से केदारनाथ की यात्रा के लिए तिलवाड़ा बाजार से होकर जाना पड़ता है, और इसके बाद यहां से अगस्त्यमुनि, गुप्तकाशी, सोनप्रयाग, गौरीकुंड आदि प्रमुख स्थान पड़ते हैं।

## गुप्तकाशी

गुप्तकाशी का वहीं महत्व है जो महत्व काशी का है। ऐसा माना जाता है कि महाभारत के युद्ध के बाद पांडव भगवान शिव से मिलना चाहते थे और उनसे आर्शीवाद प्राप्त करना चाहते हैं इसलिए वह गुप्तकाशी से केदारनाथ चले गए। गुप्तकाशी समुद्र तल से 1319 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।

## सोनप्रयाग

सोनप्रयाग समुद्र तल से 1829 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह केदारनाथ के प्रमुख मार्ग पर स्थित है। सोन प्रयाग प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। सोनप्रयाग से केदारनाथ की दूरी 19 किलोमीटर है। यह वहीं स्थान है जहां भगवान शिव और पार्वती का विवाह हुआ था।

## गौरीकुंड

सोनप्रयाग से गौरीकुंड की दूरी 5 किलोमीटर है। यह समुद्र तल से 1982 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। केदारनाथ मार्ग पर गौरीकुंड अंतिम बस स्टेशन है। केदारनाथ में प्रवेश करने के बाद लोग यहां पूल पर स्थित गर्म पानी से स्नान करते हैं। इसके बाद गौरी देवी

[1] Census of India (2011)District Census Handbook Rudraprayag, www.censusindia.gov.in/2011census/dchb/0503_PART_B_DCHB_RUDRAPRAYAG.pdf

मंदिर दर्शन के लिए जाते हैं। यह वहीं स्थान है जहां माता पार्वती ने भगवान शिव को पाने के लिए तपस्या की थी।

**केदारनाथ**

प्रसिद्ध धर्मस्थल केदारनाथ धाम रुद्रप्रयाग से 86 किलोमीटर दूर है। केदारनाथ भारत के उत्तराखंड प्रांत के प्रमुख धार्मिक स्थानों में से एक है। केदारनाथ चार धामों में से एक है। केदारनाथ समुद्र तल से 3584 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। केदारनाथ भगवान शिव के बारह ज्योर्तिलिंगों में से एक हैं। भगवान शिव को केदार के नाम से भी जाना जाता है। इसलिए इस मंदिर का नाम केदारनाथ रखा गया। केदारनाथ बर्फ से ढ़के ऊंचे–ऊंचे पर्वतों पर स्थित है। केदारनाथ हिमालय पर्वत पर स्थित है। यह हिन्दू धर्म के अनुयाइयों का पवित्र स्थान है।[2]

**ओंकारेश्वर शिव**

ऊखीमठ स्थित ओंकरेश्वर मंदिर एक प्राचीनतम शिव मंदिर हैं। इस मंदिर में भगवान शिव की पूजा की जाती हैं। यह मंदिर अदभुत शिल्प कला की विरासत है जोकि बेहतर देखरेख के चलते आज भी कायम हैं। ऊखीमठ में बना भगवान शिव का मंदिर शिव के पांच रूप उषा, शिव, पार्वती, अनिरुद्ध और मंधाता को पूर्ण रुप से समर्पित हैं जोकि केदारनाथ के समान हैं।

**तुंगनाथ**

रुदप्रयाग जिले में ऊखीमठ और गोपेश्वर रोड़ से 30 किमी दूरी पर चंद्रनाथ पर्वत के स्थित तुंगनाथ मंदिर हैं। यहां मंदिर 3680 मीटर की ऊंचाई पर हैं। मंदिर तक पहुंचने के लिए बाधित मार्ग और घने जंगल से होकर रास्ता गुजरता है। मंदिर की खास बात यह है कि इस मंदिर के गुबंद 16 दरवाजे तक फैले हैं। मंदिर परिसर मे। शिवलिंग विराजित है इसके अलावा मंदिर में ही आदि गुरू शंकराचार्य की मूर्ति स्थापित हैं। तुंगनाथ मंदिर के समीप ही मां नंदा देवी का मंदिर हैं।

**मदमदेश्वर**

मदमदेश्वर मंदिर मदमदेशवर नदी के समीप ही स्थित है यह दूसरा केदार कहलाता हैं। लोक कथाओं में मदमदेश्वर का वर्णन है यह पंच केदार स्वरुप में स्थापित शिव की नाभि हैं कथा के अनुसार शिव पांडवों से परहेज करते हुए उनका घड़ पृथ्वी में समाहित हुआ और यह स्थान मदमदेश्वर कहलाया। एकांत एंव शांत जगह में स्थापित इस मंदिर में पूजारियों की भीड़ नहीं है, मंदिर के बाहर कुछ छोटी दुकानें और बाहर तीर्थ यात्रायों के आराम के लिए एक धर्मशाला हैं।

**गौदर**

गौंदर मंदिर की अपनी विशेषता है यहाँ सर्दीयों के मौसम में 6 महीने के लिए इस मंदिर के द्वार बंद रहते हैं। परम्परा के अनुसार मंदिर की मुर्तियों को समारोह पूर्वक ऊखीमठ में पूजा जाता हैं और शिवलिंग यही स्थापित रहता हैं।

**त्रिजुगी नारायण**

भगवान विष्णु को समर्पित त्रिजुगी नारायण मंदिर गूटर और केदारनाथ को आपस में जोड़ता हैं। मंदिर निर्माण की वास्तु शैली केदारनाथ मंदिर की तरह हैं। पौराणिक कथा के अनुसार सतयुग त्रिजुगी नारायण हिमवत् की राजधानी हुआ करती थी। यहां वहीं स्थान हैं जहां भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इसी स्थान पर शिव–पार्वती की शादी का हवनकुंड बना था। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि शिव–पार्वती के विवाह में स्वंय भगवान विष्णु और समस्त देवता यहाँ एकत्र हुए थे।

**माँ देवी हरियाली**

घने जंगल और ऊंची चोटियों की बीच स्थित मां देवी हरियाली का मंदिर 1400 किलो मीटर की ऊंचाई पर हैं। यह नागरसू से 22 कि. मी. और रूद्रप्रयाग से 37 किमी की दूरी पर हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार कारगार में जन्मी देवकी की सातवी संतान को कंस ने अपनी मृत्यू के भय से जमीन पर फेंक दिया था। नतीजतन महामाया के कई अंश पृथ्वी पर बिखर जाते हैं उसमें एक अंश उस समय सीधीपीठ हरियाली देवी में गिरता हैं तभी से ये यहां स्थापित हैं। मां हरियाली देवी बाला देवी और वैष्णोदेवी के रूप में पुजा जाता हैं। मंदिर परिसर में मां हरियाली देवी, कश्तपल देवी और हीत देवी की मूर्तिया मौजूद हैं। दीपावली और जन्माष्टमी के दौरान भक्त यहां बड़ी संख्या में पहुंचते हैं।

**कोटेश्वर मंदिर**

अलखनंद नदी के पवित्र तट पर स्थित कोटेश्वर मंदिर रूद्रप्रयाग से 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं। कोटेश्वर मंदिर को एक गुफा मंदिर भी कहा जाता हैं। मंदिर में कई देवी–देवताओं की प्राकृतिक प्रतिमाएं हैं। यह केदारनाथ मंदिर से पहले भगवान शिव का तप स्थल माना जाता हैं। हर वर्ष यहाँ श्रृद्धालू हजारों की संख्या में दर्शन करने पहुंचते हैं।

**कालीमठ**

ऊखीमठ और गुप्त काशी के करीब ही कालीमठ स्थित हैं. सीधीपीठ की तरह कालीमठ प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों में से एक हैं। इस स्थान पर मां काली की पूजा करनें हजारों श्रृद्धालू नवरात्र में आते हैं.

**कार्तिक स्वामी**

कार्तिक स्वामी मंदिर रुद्रप्रयाग से 38 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ पहुंचने के लिए पोरखी रोड़ से होते हुए लगभग 3 कि.मी. कनकचूरी गांव में जाना होता हैं इसके समीप ही भगवान शिव के पुत्र कार्तिक स्वामी का मंदिर स्थित हैं। इस स्थान की खास बात यह हैं कि यह प्रकृति की गोद में रचा बसा हैं यहाँ से पर्वतराज हिमालय की ऊंची चोटिया दिखाई पड़ती हैं।

**चंद्रशिला**

चंद्रशिला उत्तराखंड में हिमालय की सबसे ऊंची चोटियों में से एक हैं। यह 3679 मी. ऊंचाई पर स्थित हैं यह चढ़ाई करना सबसे ज्यादा कठिन हैं। रुदप्रयाग जिले का गढ़वाल विकास प्राधिकरण इस चोटी पर चढ़ाई की व्यवस्था कराता हैं। यह स्केलिंग, स्कीइंग और ट्रैकिंग की जाती हैं। रूद्रप्रयाग जिले की मिनी पिक कहलाने वाला स्थान जितना मुश्किलों से भरा हैं उतना ही रोमंचित भी करता हैं। सर्दियो के दिन में बर्फ की चादर सी बिछ जाती हैं। कई स्थानों पर ताजी घास के मैदान बन जाते हैं। यह से प्रकृति का अनुपम दृश्य नजर आता हैं।

**इन्द्रशनि मनसा देवी**

रुदप्रयाग से 14 किमी दूर कांदल पट्टी गांव में मां इन्द्रशनि मनसा देवी का मंदिर स्थित हैं। ऐसा माना जाता हैं कि यह मंदिर आदि शंकराचार्य के समय निर्माण किया गया हैं। यह मंदिर उत्कृष्ट शिल्प शैली के लिए जाना जाता हैं।

ऐसा माना जाता हैं कि इन्द्रशानि मनसा देवी की उत्पत्ति स्कंद पुराण, देवी भगवता और केदारनाथ में वर्णित हैं। इन्द्रशानि कश्यप

[2] डॉ सतीश शाह, उत्तराखंड में आध्यात्मिक पर्यटनरू मंदिर एवं तीर्थ, नई दिल्लीरू डाईमड पॉकेट बुक्स

की मानस कन्या हैं जिसे वैश्वी, शवी और विशहरी के नाम से जाना जाता हैं।

### केदारनाथ मंदिर

केदारनाथ मंदिर भारत के उत्तराखंड राज्य के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित है। उत्तराखंड में हिमालय पर्वत की गोद में केदारनाथ मंदिर बारह ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित होने के साथ चार धाम और पंच–केदार में से भी एक है। यहां की प्रतिकूल जलवायु के कारण यह मंदिर अप्रैल से नवंबर माह के मध्यम ही दर्शन के लिए खुलता है। पत्थरों से बने कत्यूरी शैली से बने इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि इसका निर्माण पाण्डव वंश के जनमेजय ने कराया था। यहां स्थित स्वयम्भू शिवलिंग अति प्राचीन है। आदि शंकराचार्य ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया।

केदारनाथ की बड़ी महिमा हैं उत्तराखंड में बद्रीनाथ और केदारनाथ ये दो प्रधानतीर्थ हैं। दोनों के दर्शनों का बड़ा ही महत्वहैं। केदारनाथ के संबंध मे लिखा है कि जो व्यक्ति केदारनाथ के दर्शन किये बिना बद्रीनाथ की यात्रा करता है, उसकी यात्रा निष्फल जाती है और केदारनापथ सहित नर–नारायण–मूर्ति के दर्शन का फल समस्त पापों के नाश पूर्व जन्म की मुक्ति की प्राप्ति बतलाया गया हैं।

### पंचकेदार

पंचकेदार की कथा ऐसी मानी जाती है कि महाभारत के युद्ध में विजयी होने पर पांडव भ्रातृहत्या के पाप से मुक्ति पाना चाहते थे। भगवान शंकर पांडवों की भक्ति, दृढ संकल्प देख कर प्रसन्न हो गए। उन्होंने तत्काल दर्शन देकर पांडवों को पाप मुक्त कर दिया। उसी समय से भगवान शंकर बैल की पीठ की आकृति–पिंड के रूप में श्री केदारनाथ में पूजे जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि जब भगवान शंकर बैल के रूप में अंतर्ध्यान हुए, तो उनके धड़ से ऊपर का भाग काठमाण्डू में प्रकट हुआ। अब वहां पशुपतिनाथ नाम से प्रसिद्ध मंदिर हैं। शिव की भुजाएं तुंगनाथ में, मुख रुद्रनाथ में, नाभि मदमदेश्वर में और जटा कल्पेश्वर में प्रकट हुई। इसलिए इन चार स्थानों सहित श्री केदारनाथ को पंचकेदार कहां जाता है। यहां शिवजी के भव्य मंदिर बने हुए हैं।

### उपसंहार

रूद्र प्रयाग जनपद के मंदिर विश्वप्रसिद्ध हैं. इस जनपद में सतयुग कालीन मंदिर के साथ साथ महाभारत कालीन मंदिर विराजमान हैं. यहाँ के मंदिर केवल रूद्र प्रयाग ही नहीं भारत की संस्कृति के विकास और संरक्षण में भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं. पर्वतीय उच्चावच के कारन ये दुर्गम हैं. परन्तु यातायात के आधुनिक विकास ने यहाँ के मंदिर तक की पहुँच को सुगम बना दिया है. रुद्रप्रयाग के मंदिरों से यहाँ की स्थानीय संस्कृति के साथ साथ यहाँ के त्योहार, लाक गीत और परम्परों को संजोये हुए है. रुद्रप्रयाग का पर्यटन संस्कृति रूप से बहुत ही समृद्ध और विवधताओं से भरा हुआ है.

### सन्दर्भ


1. Adrian Franklin Tourism an Introduction, Sage Publication: London, 2003.
2. Bist, Harshwanti Tourism in Garhwal Himalaya, 1994, 47-89.
3. Bob Mckercher, Hillary du Cross Tourism: The Partnership Between Tourism and Cultural Heritage Management, Routledge, 2012.
4. Census of India District Census Handbook Rudraprayag, www.censusindia.gov.in/2011census/dchb/0503_PART_B_DCHB_RUDRAPRAYAG.pdf, 2011.
5. Jonathan Mitchell, Caroline Ashley, Tourism and Poverty Reduction: Pathways to Prosperity, Earthscan: London, 2010.
6. Khajuria Sandev. Tourism Risks and Crimes at pilgrimage Destinations: A Case Study of Shri Mata Vaishno Devi, IJEMR, 2014; 8(8):77-93.
7. Martin Mowforth, Ian Munt. Tourism and Sustainability, Routledge: New York, 1998.
8. Maureen Moynagh. Political Tourism and Its Texts, University of Toronto Press: Toronto, 2008.
9. Melanie K. Smith Issues in Cultural Tourism Studies Psychology Press, 2003.
10. Philip L. Pearce Tourist Behaviour, Channel View Publications: Toronto, 2009.
11. Gupta SK. Economic Impact of Vaishnao Devi Pilgrimage: An Analytical Study, IJHTS, 2015.
12. Sharma Rajni, *et al.* Impact of peace and Disturbances on Tourism and horticulture in Jammu and Kashmir, IJSRP, 2012, 2(6).
13. Susan Pitchford. Identity Tourism: Imaging and Imagining the Nation, Emerald: WA, Sustainability, 2008.
14. Tim Knowles, *et al.* The Globalization of Tourism and Hospitality: A Strategic Perspective, Thomson: London, 2004.
15. UTDC, Published Report. Uttarakhand Tourism Development Corporation. Vasanti Gupta; 'Sustainable Tourism: Learning from Indian Religious Traditions, 2015.